Page No.:
Date:

HISTORY (H)
B.A. — III PART - 'C'
PAPER - Vth.
HISTORY OF INDIA (1550 - 1750)
C. Urban social structure.
UNIT - IVth. Urban centres.

⇒ नगरीय सामाजिक संरचना :-

⇒ पारिवारिक और लैंगिक संबंध :-

मध्यकाल में मृत्यु दर असाधारण रूप से उच्च थी। बनारसीदास के दो भाईयों की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। इसी प्रकार उसके आठ बच्चों की मृत्यु भी बचपन में ही हो गई थी।

मध्यकाल के अखलाक साहित्य का केंद्र पुरुष प्रधान था। महिलाओं को अखलाक के आदर्शों या मापदंडों से दूर रखा गया। यह स्पष्ट करता है कि बेटों के आदर्श क्या होने चाहिए महिलाओं को इन आदर्शों में शामिल नहीं किया गया था।

15वीं शताब्दी के महान एक ग्रंथ ज्ञान पंचमी कथा में उल्लिखित है कि बेटी का जन्म दुःख का कारण

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

होता है। इस कथन से मध्यकाल के दौरान महिलाओं की स्थिति स्पष्ट रूप से पता चलता है। सामान्यतौर पर महिलाओं को परदे में रखा जाता था ताकि लोगों की नजर उन पर न पड़े।

अकबर के समय में महिलाओं की दृश्यता बहुत ही स्पष्ट थी। मुगल-शाही महिलायें सम्राट को सलाह देती थी। और प्रशासन में सक्रिय भूमिका में नजर आती थी। बाबर की दादी एहसान दौलत बेगम बाबर को विवेक-पूर्ण सलाह दिया करती थी। नूरजहाँ और मुमताज महल, जहाँगीर और शाहजहाँ की शक्तिशाली पत्नियाँ थीं। नूरजहाँ ने अपने रिश्तेदारों और ईरानी/राजपूत अमीर को मिलाकर स्वयं एक गुट का गठन कर रखा था जिसे नूरजहाँ-गुट कहा जाता था।

मध्ययुग भारत में महिला श्रमिक बल भी समान रूप से प्रभावी था, जो कि एक आम चलन था। शहरी क्षेत्रों में सबसे बड़ा नियोक्ता निर्माण उद्योग था। मुगलचित्रों में इन्हें ईंटों को तोड़ते हुए चूने छानते हुए तथा निर्माण स्थल पर

मारा ले जाते हुए दर्शाया गया है।

बड़ी संख्या में महिलायें घरेलू नौकरों के रूप में कार्यरत थीं। पेल्सर्ट के अनुसार अमीरों की पत्नियों के पास कम से कम दस सेविकायें होती थी। जहाँ तक इन घरेलू सेविकाओं की मजदूरी का संबंध है। मुगल हरम में कार्यरत महिलाओं की मासिक मजदूरी के भुगतान की दो श्रेणियाँ थी - पहली श्रेणी वाली सेविकाओं की मजदूरी मजदूरी 20 से 51 रुपये प्रतिमाह थी और दूसरी श्रेणी वाली सेविकाएं जो प्रथम श्रेणी से थोड़ी निम्न स्तर की होती थी, की मजदूरी 2 से 40 रुपये प्रतिमाह तक थी।

मुगल परिवार और अभिजात वर्ग के लोगों के बीच रखैल प्रथा का प्रचलन था, यह शादी किये बगैर पूरी तरह से आनंद केलिए दासत्व के बंधन की एक व्यवस्था थी। किसी भी स्वतंत्र या दास लड़की या युद्ध में बंधक बनाई हुई लड़की या औरत को अपने स्वामित्व में लेकर रखैल बनाये जाने की प्रथा थी।

Page No.:
Date:

जब किसी गुलाम लड़की को रखैल बनाया जाता था तो गुलाम लड़कियों के बीच उसकी स्थिति बदल जाती थी और अब कुछ विशेषाधिकारों की हकदार हो जाती थी। अगर वह किसी बच्चे को जन्म दे देती थी, तो भी वह गुलामी से मुक्त नहीं हो जाती थी। तो किन्तु मे उसे फिर से बेचा नहीं जा सकता था या उपहार के रूप में किसी और को नहीं दिया जा सकता था।

हलाँकि उनकी स्थिति कानूनी रूप से विवाहित पत्नियों - जिनकी स्थिति सर्वोच्च थी, से अलग थी। बाबर पत्नियों के लिए स्थानीय नार शब्द का प्रयोग किया है। कानून विवाहित पत्नियाँ हरम की हिस्सा भी होती थी।

=

To be continue...
DR. UDAY KUMAR.
DR. L. K. V. D. College Tajpur